दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को झाबुआ, इन्दौर, मध्य प्रदेश में प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

———————————————————

माननीय सभापति जी, बहनों और भाइयों।

आज ये मेरा पहला अवसर है, आपके जिले में आने का, मामा बालेश्वर प्रसाद जी के जरिये और भंवरजी के जरिये मुझे यहां का कुछ हाल तो पहले से मालूम था लेकिन मुझे स्वयं अपनी आंखें से देखने का आपके इस इलाके को, पहले सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। अब आज जब इस मौके पर आया हूं, तो देश की हालत निहायत खराब है। हर तरीके से खराब है। अब आगे इलेक्शन होने वाला है, देश की बड़ी पंचायत का, जिसको लोकसभा कहते हैं और जनवरी में जिसके लिए वोट पड़ने वाली है।

तो, आया तो मैं उस वोट के सिलसिले में कि आप लोकदल के उम्मीदवार को वोट दें, यानी भंवरजी को वोट दें। लेकिन ये तो एक मामूली–सी बात है, असल में, मैं देश की समस्याओं को थोड़ा–सा आपको समझाना चाहता हूं।

समस्याएं बहुत गम्भीर हो चुकी हैं। अंग्रेजों के जमाने में जब नयी पीढ़ी के लोग महात्माजी के नेतृत्व में थोड़ा–बहुत काम देश की सेवा का करते थे, तो हम तरह–तरह के सपने अपने देश के लिए देखा करते थे। हम यह सोचा करते थे कि अंग्रेजों के जाने के बाद हम इसको ऐश्वर्यशाली, मालदार, धनवान और शक्तिशाली बना देंगे और फिर इसकी इज्जत और गौरव दुनिया में बढ़ जाएगा, जितना कि पहले किसी जमाने में हजारों बरस पूर्व था।

लेकिन, अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारे वो सारे सपने भंग हो गये। हमारे सारे अरमान खतम हो गये। आज दुनिया में भारतवर्ष सबसे ज्यादा गरीब देश है, लगभग सबसे ज्यादा गरीब। दुनिया के 125 मुल्कों में जिनकी आबादी, जिनकी जनसंख्या दस लाख से ज्यादा है, उनमें आज हमारा नम्बर 111वां है, 110 देश हमसे मालदार हैं और 14 देश हमसे गरीब हैं। छोटे–छोटे देश और गरीब हैं। छोटे–छोटे देश, और गरीब हैं बहुत। चलो इसमें इतनी बात दिखलाई। लेकिन हम अगर ऐसी नीति अपनाते कि इसकी गरीबी मिटे, तो गरीबी मिट जाती। लेकिन ज्यादा अफसोस की बात यह है जैसे समय बीतता जा रहा है, अपना देश और गरीब और गरीब, गरीब से गरीबतर होता जा रहा है। जब इंदिराजी ने चार्ज सम्भाला था, सन् 66 में, तो उससे एक साल पहले अपने देश का नम्बर 85वां था। 125 देशों में 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब। 125 में से 40 हमसे गरीब और 84 हमसे मालदार। आठ साल के बाद, सन् 73 में हमारा नम्बर 102वां, तीसरा, चौथा हो गया। लंका, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान की एक ही आमदनी हुई तो हमारा नम्बर एक तरीके से एक सौ नम्बर 103 और चार हो गया, और नीचे को खिसक गये 18 पोजीशन। यह बात सन् 1973 की बतला रहा हूं, तीन साल बाद सन् 76 जिसके आंकड़े मिलते हैं, तब 103 और चार से खिसककर आठ पोजीशन और नीचे आ गये। ये बता देता हूं कि 111वां नम्बर है, देश की गरीबी का यह हाल है।

आज हमारे 84 फीसदी आदमी ऐसे हैं 100 में 84 आदमी, जिनको खाने भर के लिए नहीं मिलता है, यथेष्ट भोजन नहीं मिलता। ऐसा भोजन नहीं मिलता है कि जिसको खाकर स्वस्थ्य रह सकें। दूध अंग्रेजों के जमाने में जितना मिलता था एक हिन्दुस्तानी को, आज उतना नहीं मिलता। गरीब आदमियों के लिए दूध एक औषधि और दवा बनकर रह गया है कि

डाक्टर और वैद्य कहें कि दूध भी पिओ, तब वो औषधि के तौर पर पिया जाएगा, तो यह है गरीबी का हाल।

दूसरी हमारी जो खराबी हुई है अंग्रेजों के जाने के बाद या कांग्रेस के जमाने में, वो यह कि बेरोजगारी बढ़ती जा रही है– गांव में भी, शहरों में भी। गांव में जो जमीन थी, जमीन तो उतनी ही है, हमारी औलाद बढ़ती जा रही है, तो ये पुराने खेतों में मेढ़ से मेढ़ लगती जा रही है और 51 फीसदी, 50 फीसदी से ज्यादा, आधे से ज्यादा ऐसे किसान हैं, जिनके पास चार बीघे से कम जमीन है। 33 फीसदी ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे से कम है। 18 ऐसे हैं जिनके पास दो से लेकर चार है, तो ये बेरोजगार कहे जाएंगे, ये किसान कहे जायेंगें? ये नाम के किसान हैं, ये तो भूखें मरते हैं और 26 फीसदी सारे देश की आबादी के ही, यानी चौथाई से ज्यादा हमारे यहां खेतिहर मजदूर हैं, जिनके पास कोई काम नहीं है, सिवाय खेतीबाड़ी के, शायद इसीलिए नौकरी कर रहे हैं।

तो, ये तो गांव का हाल है। और शहर का थोड़े से मैं बताये देता हूं कि पढ़े–लिखे लड़के लाखों की तादाद में मारे–मारे फिरते हैं, जो कामदिलाऊ दफ्तर हैं, शहरों में–एम्प्लायमेंट एक्सचेंज अंग्रेजी में कहलाते हैं, एक करोड़ 40 लाख लड़कों के नाम वहां लिखे हुए हैं, बी0ए0 पास, हाई स्कूल पास, इंजीनियरिंग पास और साइंस पास और कुछ बेपढ़े भी हैं, जो ये चाहते हैं कि हमको नौकरी मिल जाए, काम मिल जाए, लेकिन नहीं मिलता।

यही नहीं, और भी जानकर आपको तकलीफ होगी बहुत ही। आपको संक्षेप में बताना चाहता हूं, तो गांव वालों का और शहर वालों का जितना फर्क था अंग्रेजों के जमाने में, वो बजाय कम होने के बढ़ गया। जब अंग्रेज गये थे–अगर सौ रुपया आमदनी एक आदमी की थी, जो गांव का रहने वाला था, तो शहर वाले की या खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वाले की आमदनी पौने दो सौ रुपये थी। सौ और पौने दो सौ–ये फर्क था। हम इस फर्क को मिटाना चाहते थे। लेकिन जैसा मैंने अभी कहा, इसका उल्टा हो गया। ये हो गया कि अभी आज अगर गांव वाले की आमदनी 100 है तो शहर वाले की आमदनी साढ़े तीन सौ है, 346 रुपये है शायद। तो एक और पौने दो का फर्क था, अब एक और साढ़े तीन का हो गया। अब बड़े–बड़े सेठ बढ़ते जा रहे हैं। बस एक ही मिसाल दिये देता हूं। एक सेठ हैं, बिड़ला का नाम सुना होगा। सन् 51 में उसकी सम्पति 53 करोड़ की थी। आज 1100 करोड़ की है। तो ये खराबियां सब पैदा हुईं। और, बेईमानी भी राज–कर्मचारियों में और राज–कर्मचारियों से ज्यादा राजनीतिक नेताओं में, बेईमानी भी और भ्रष्टाचार भी बढ़ता जा रहा है। ये चार समस्याएं है, देश की, जो हल करनी हैं।

अब जहां तक गरीबी का ताल्लुक है, तो महात्माजी की बात को माना नहीं हमारे लीडरों ने। महात्मा केवल एक बात कहत थे कि हिन्दुस्तान गांव में रहता है और खेती करता है। हिन्दुस्तान बम्बई में या दिल्ली में नहीं रहता। बहुत थोड़े आदमी यहां रहते हैं, ज्यादातर गांव में रहते हैं, खेती करते हैं, तो खेती की तरफ ध्यान देना चाहिए। जब खेत की पैदावार बढ़ जाएगी तो लोग सुखी होंगे। किसान के पास अगर पैसा आयेगा, उस समय अगर उसकी पैदावार बढ़ी, वह बाजार में बेचेगा, मंडी में बेचेगा, उसके पास पैसा आयेगा, तब अपनी बहू–बटियों के लिए, अपने बच्चों के लिए कपड़ा खरीदेगा, जूता खरीदेगा, उसको पढ़ायेगा, उसके लिए साइकिल भी खरीदेगा, घड़ी भी खरीदेगा, तो व्यापार भी बढ़ जाएगा। मोटर भी

चलने लगेंगे, उद्योग–धंधे लग जाएंगे। तो ये उनका कहना था कि सबसे ज्यादा ध्यान खेती की तरफ दो।

दूसरी बात उनकी कहने की यह थी कि बड़े–बड़े कारखाने लगाये जायेंगे लेकिन बहुत थोड़े–से, दस्तकारी होनी चाहिए ज्यादा, बहुत ज्यादा, अर्थात् गांवों में आजादी से लोग अपना कपड़ा बुनें, अपनी दियासलाई बना सकते हैं, साबुन बना सकते हैं और सैकड़ों चीजे हैं, जो अंग्रेजों के आने से पहले हमारे पुरखे बनाया करते थे अपने हाथ से। सौ में 60 आदमी जब खेती करते थे, 25 आदमी गांव में दस्तकारी या हस्तकला में लगे होते थे। अब 60 की बजाय 72 तो खेती में बढ़ गये, जमीन पर बोझ बढ़ गया और उद्योग–धंधे 25 से घटकर 9 या 7 रह गये तो देश आज गरीब हो गया। खेती की यह उपेक्षा हुई कि जितना रुपया बाहर से कर्जे पर मिला या अपने मुल्क में टैक्स लगाकर वसूल किया गया, उसको ज्यादातर बड़े–बड़े कारखानों में लगाया गया। खेती की पैदावार बढ़ाने पर नहीं लगाया। यह तय किया कि रुपया बजाय खेत की पैदावार बढ़ाने में लगाने के, बाहर से मंगा लेंगे हम अन्न। जब अंग्रेज गये थे तो सौ में साढ़े सत्रह बीघे में सिंचाई का प्रबंध था–साढ़े सत्रह में, आज 24 या 25 में है। केवल 25 में क्यों ?

तीस साल के स्वराज के बाद सात या साढ़े सात फीसदी में सिंचाई का प्रबंध किया। अगर 35 फीसदी रकबे में सिंचाई का प्रबंध हो जाता, तो आज जो ये अकाल या विशकाल पड़ा हुआ है, तो चाहे बारिश बारह महीने तक नहीं होती, तब भी हमारे लोगों के कोई कष्ट नहीं होता। पंजाब का सूबा है। पंजाब के सूबे में 80 फीसदी रकबा सिंचित है। 80 बीघे जमीन है तो ओह! सौ बीघे, तो 80 में सिंचाई का प्रबंध है। उनके यहां भी बारिश नहीं हुई, तकलीफ है उनको भी, लेकिन उतनी तकलीफ नहीं है, जितनी कि आपके सूब में है, जितनी कि यू0पी0 में है, जितनी बिहार में है और जितनी राजस्थान में है और सिंचाई तो आपके यहां बहुत ही कम हुई है। सिंचाई की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। अगर सिंचाई की तरफ ज्यादा ध्यान दिया जाता, तो आज हमको जो कष्ट हमारे गांव वालों को, किसानों, गरीबों को, मजदूरों को, बल्कि शहर वालों को भी है, वो कष्ट नहीं होता।

तो अब हमने यह तय किया है कि आगे को हम खेती पर ज्यादा ध्यान देंगे। ये मैं आज से नहीं कह रहा हूं, ये मैं सन् 57 से कह रहा हूं, जिसको 22 साल हो गये। मैं कांग्रेस में ही था, कांग्रेस में रहा हूं बराबर। अनेक बार जेल गया हूं, लेकिन जो नीतियां गांधीजी की थीं, हमारे लीडरों ने छोड़ दीं और इसलिए मुझको ये कांग्रेस छोड़ देनी पड़ी। मैं बराबर यह कहता रहा कि खेती की पैदावार बढ़ाने पर ज्यादा ध्यान दो, लेकिन मेरे साथियों ने नहीं सुना। वे यह करते रहे कि सौ में बीस रूपये खेती पर, 24 रूपये कारखानों पर और जो बिजली पैदा होती थी उस पर बहुत खर्च होता था। उसमें 80 फीसदी बिजली बड़े कारखानों पर और 10–12 फीसदी बिजली गांव में या खेत की पैदावार बढ़ाने पर। 75–80 कारखानों पर और, 10–12 फीसदी और जगह और खेत पर केवल 10 फीसदी। तो, बिजली का सारा खर्चा जो है, वो भी शहर पर होता रहा। तो हमने यह तय किया है कि खेत की पैदावार बढ़ाने पर ज्यादा पैसा लगायेंगे, सिंचाई का प्रबंध करने पर ज्यादा पैसा लगायेंगे। अब हमारे पास अन्न की कमी नहीं है, लेकिन कुछ लोग यह प्रचार करते हैं। आपके यहां यह सुना है और जिम्मेदार लोग यह प्रचार करते हैं कि दिल्ली की गवर्नमेंट उनकी मदद नहीं करती।

खैर, यह झूठी बात है, लेकिन –– (शोर) अब जो नौजवान ये शोर मचा रहे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं कि पढ़े–लिखे लोग हो, अगर आप इस सभा में शोर मचाओगे तो आपकी सभा में दूसरे लोग शोर मचायेंगे और आपकी सभा भी नहीं हो सकेगी। सीधा ईमानदारी का और सभ्यता का तकाजा यह है, अगर सभा में आये हो तो चुपचाप बैठकर सुनो, नहीं सुनना चाहते हो, चले जाओ। लेकिन बिघ्न डालने से काम नहीं चलने वाला। बिघ्न न डालिये, आवाज आप किस बात की लगा रहे हैं, कौनसी बात मैंने गलत कही?

मैं यह कर रहा हूं कि खेती की उपेक्षा हुई है, खेतों में सिंचाई का प्रबंध नहीं किया गया, जितना होना चाहिए था। हमने यह तय किया है कि हम सिंचाई का प्रबंध ज्यादा करेंगे। और हमने इसलिए तय किया है कि मैं और मेरे साथी ज्यादातर वो लोग हैं, जो गरीब किसान के घर पैदा हुए हैं, जो छप्पर के नीचे पैदा हुए हैं, कच्ची दीवारों के ऊपर छप्पर रखा है, उसके अन्दर पैदा हुए हैं, इसलिए हमको गांव की तकलीफें मालूम हैं। हमारे बाप अपनी जमीन के मालिक भी नहीं थे, काश्तकार थे, बुलंदशहर के जिले के अन्दर।

तो, मुझको और बहुत से मेरे साथियों को, गांव वालों की तकलीफ क्या होती है, किसान की तकलीफ क्या होती है, छप्पर में पैदा होने से क्या तकलीफ होती है, वो मुझको सब कुछ मालूम है। मैं अब केवल यह कह रहा था कि देर तक बारिश नहीं हुई, गांव वालों को तकलीफ होगी, आप लोगों को तकलीफ होगी। तो, हमने यह तय किया है कि कोई आदमी, एक आदमी भी भूखा नहीं मरने दिया जाएगा हिन्दुस्तान के अन्दर, कोई नहीं मरने दिया जाएगा।

हमारे पास दो करोड़ मन गल्ला मौजूद है–– टन, तो हमने आपकी गवर्नमेंट को कह रखा है, जो गवर्नमेंट आपकी वहां पर है, भोपाल के अन्दर, और अभी आपके अफसरों को भी बुलाया था, हिन्दुस्तान के अन्दर सूखा पड़ा हुआ है, कम या ज्यादा। उनके सब अफसरों को भी हमने बुलाया हुआ था। अभी परसों की बात, 9 तारीख थी, मैं खुद उस मीटिंग में गया था। आपके चीफ सेक्रेटरी गये थे, जिनके बारे में मेरी बहुत अच्छी राय है कि बहुत ही योग्य प्रशासक हैं। उनके सामने सारी बातें हुई। हमने उनसे जब भी कह दिया। पहले जब मैं आया था रायपुर में और बिलासपुर में, तब भी मैंने कह दिया कि जितने भी अन्न की जरूरत होगी मिलेगा। और काम करने, जितने काम मैं खोलू, ताकि देश की और गांव वालों की सेवा हो, रास्ते बनें, कुंए बनें, सड़कें बने, नहर बनें और जो आदमी उस पर काम करे, बजाय उनको पैसा देने के, अन्न दो। जितना भी अन्न इस काम के लिए जरूरत होगी, हम लाखों–लाखों टन आपको देने के लिए तैयार हैं।

उसके बाद कुछ लोग ये प्रचार करते हैं, मुझे अफसोस के साथ ये कहना पड़ता है कि जिम्मेदार लोग प्रचार करते हैं, कि हम सेवा नहीं कर पा रहे हैं, मध्य प्रदेश में गरीब लोगों की, क्योंकि दिल्ली की गवर्नमेंट मदद नहीं करती। मेरा कहना है, ये झूठा प्रचार है, ये बेईमानी का प्रचार है, ये राजनीतिक कारणों से प्रचार किया जाता है। मैं आपको बचन देता हूं, मैं ये कह रहा हूं, जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि हमको बतलायें कि क्या चीज मांगी आपकी गौरमेंट ने, जो हमने दी नहीं, दी नहीं, जो हमारी बात फैली।

तो, हमारे पास कोई चीज हो और हमने न दी हो आपको, तब आप शिकायत कर सकते हैं। हम तो ये भी प्रबंध कर रहे हैं, दूसरे देशों से प्रबंध कर रहे हैं और सूबों से मांग रहे हैं कि पहाड़ी इलाका जहां जमीन हो, वहां कुंआ नहीं खुद सकता। तो रिंग एक मशीन

होती है, उस मशीन के लिए भी हमने कहा है कि जितनी मशीनें मिल सकती हैं अपने देश के अन्दर तो राजस्थान में मध्य प्रदेश में और उत्तर प्रदेश में पहुंचानी हैं, उन इलाकों में जहां आज भी मामूली आदमी कुंआ नहीं खोद सकता। और जो पथरीली जमीन है, उसका भी प्रबंध कर रहे हैं। अन्न हम आपको जिनता दे सकते हैं, वो देने के लिए हम तैयार हैं।

मैं कह रहा हूं कि (शोर) अगर शरीफ घरों में पैदा हुए हो तो बिना नारे लगाये चले जाओ। अगर शरीफ घरों में पैदा हुए हो तो, बस इतना ही कह सकता हूं। (तालियां) वरना कानून यह है, वो तो मैंने पुलिस वालों को रोका हुआ है कि कोई आदमी दूसरे की सभा में विघ्न डालेगा तो वो सीधा जेल भेजा जा सकता है।

तो, अगर आपको कोई शिकायत है, अब कोई–सी शिकायत हो तो आप लोग अपने मिनिस्टरों से कह सकते हो। मिनिस्टर अगर नहीं सुनते हैं किन्हीं कारणों की वजह से, तो मामा बालेश्वर प्रसाद जी हैं, भंवरजी हैं, इनसे कहो। तो जो हमको चिट्ठी लिखेंगे ये तो हमसे जितना हो सकेगा, आपकी तकलीफ को दूर करने की कोशिश करेंगे।

अब दूसरी बात मैं आपसे यह कहना चाहता था कि बड़े–बड़े कारखाने कुछ जरूरी हैं, बहुत सा सामान बनाने को, हवाई जाहज बनाने को, कोयला खोदने के लिए, बिजली पैदा करने को, रेल का इंजन बनाने को वगैरा–वगैरा। लेकिन ज्यादातर दस्तकारी गांवों में होनी चाहिए। दस्त माने हाथ, हाथ से जो काम हो सकता है, उस काम के लिए हम नहीं चाहते बड़े कारखाने खुलें। मान लो, कपड़ा हाथ से बन सकता है, सूत बनाया जा सकता है, चरखे से और कपड़ा बनाया जा सकता है हथ करघे से – कर माने हाथ। तो करघे पर बनाया जाना चाहिए। गांधी एक लखपति आदमी के घर पैदा हुए, बैरिस्टर थे, बैरिस्टरी उन्होंने छोड़ दी और देश को उठाने के लिए करघा–हथकरघा लेकर बैठ गये। क्यों ? क्या वह किसी जुलाहे के घर में पैदा हुए ? इसलिए यह बताने के लिए कि यहां आदमियों की तादाद ज्यादा है, प्राकृतिक साधन, जमीन, लोहा, कोयला, तेल वगैरा कम है, इसलिए यहां बड़े कारखाने बहुत कम होंगे, जो जरूरी हों, अनिवार्य हो देश के लिए। बाकी छोटी दस्तकारी होनी चाहिए और जमीन भी थोड़ी–थोड़ी होगी, न बड़े फार्म हों, न बड़ी फैक्टरी होगी।

लेकिन हमारे यहॉ बड़े–बड़े कारखाने लगा दिये हैं जिनमें मुनाफा तो बहुत होता है – पूंजीपति को लेकिन आदमी कम लगते हैं। तो अब हमने ये भी तय किया हुआ है, अगर मेरे साथी राजी हो गये और हमारे हाथ में शक्ति आ गयी – जनवरी में, दिल्ली में, तो हम बड़े–बड़े कारखानेदारों को जो ऐसा सामान पैदा करते हैं, जो हाथ से अपने लोग, गरीब लोग, गांव में रहने वाले बना सकते हैं –– दियासलाई बना सकते हैं, कालीन बना सकते हैं, साुबन बना सकते हैं, कपड़ा बना सकते हैं, तो ऐसी चीजों को बनाने के लिए कारखाने पहले से खुले हुए हैं। हम इन कारखानों को बंद तो नहीं करना चाहते लेकिन उनके लिए हम यह कानून बनाना चाहते हैं कि वो अपना सामान बाहर बेचेंगे और हिन्दुस्तान के अन्दर इन चीजों को हाथ से बनाया जाए, ताकि करोड़ों लड़कों को हमारे यहां रोजगार मिल जाए, यह मैने तय किया हुआ है। तो फिर आपको यह भूखा – नंगा आदमी इस देश के अन्दर दिखायी नहीं देगा।

हमारी कोई नयी नीति नहीं है, जो गांधीजी कह गये थे, जो हमारे राष्ट्र का पिता कह गया था, जिसके बराबर का आदमी सैकड़ों बरस से दुनिया में पैदा नहीं हुआ है, वो ही काम करना चाहते हैं बस। दो चीजों पर हमारा जोर होगा – एक तो यह कि खेती की पैदावार

बढ़ायें। जमीन तो नहीं बढ़ेगी, लेकिन फी–बीघे पैदावार बढ़ सकती है, अगर पानी का इंतजाम हो जाये, अच्छे बीज का इंतजाम हो जाए और खाद का इंतजाम हो जाए। दूसरा यह कि बड़े कारखाने बहुत कम लगायेंगे, दस्तकारी पर जोर देंगे, तब जा के बेरोजगारी मिटेगी, सबको काम मिलेगा।

एक बात मैं यह बताना चाहता हूं कि यह खराबी क्यों ? ये राज, ये राजनीतिक नेता बहुत से जो हैं, भ्रष्ट हो गये। कुछ तो भ्रष्ट हो गये, कुछ पर भ्रष्टाचार के चार्ज लगे हुए हैं, इल्जाम लगा हुआ है, क्यों ? लालच में फंस गये। अपने इलेक्शन के लिए लाखों–लाखों रूपया लेते हैं, बड़े–बड़े लोगों से, सेठों से, जब अपने चुनाव लड़ने के लिए राजनीतिक नेता रुपया लेंगे बड़े सेठों से, तो सेठों के गुलाम हो जाएंगे, भ्रष्टाचार फैलेगा।

इसलिए हमारी पार्टी ने यह तय किया है कि हम किसी सेठ से इलेक्शन लड़ने के लिए एक पैसा नहीं लेंगे, चाहे नतीजा कुछ भी हो। ये हमारी राय आज से नहीं है, पहले से है। जब हमने भारतीय क्रांति दल बनाया था, तब भी हमारे पास लाखों–लाखों रूपया लेके लोग पहुंचे थे। अब भी आते हैं देने के लिए, लेकिन हमने मना कर दिया लेने से। बोले, क्यों ? क्योंकि हम ईमानदार आदमी को खड़ा करेंगे। अगर आपके यहां कोई ऐसा आदमी हम खड़ा करते हैं, या कहीं भी, जो ईमानदार नहीं है, तो मैं आपसे कहूंगा कि उसको वोट मत देना, हरगिज–हरगिज वोट मत देना। ईमानदार आदमी को वोट दें, ताकि वो मिनिस्टर भी बने तो वहां बड़ा काम सम्भाल सकता है। अगर चीफ मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर बेईमान हो जाएगा, ये देश तरक्की करने वाला नहीं।

मैं दूसरी पार्टी के लोगों को कहना चाहता हूं कुछ। जगजीवनराम साहब हैं, एक गरीब घर में पैदा हुए हैं, लेकिन आज हिन्दुस्तान के सबसे मालदार आदमियों में उनकी शुमार है। घर में जरूर गरीब के पैदा हुए, लेकिन बहुत मालदार आदमी हैं, इससे ज्यादा व्याख्या नहीं करना चाहता।

जहां तक इंदिरा का सवाल है, ये आप जानते ही हो, किस तरह की वो महिला है। उसने कसम खा रखी है कि सच कभी नहीं बोलूंगी। हां, वो झूठ ही झूठ बोलेगी, झूठा ही प्रचार करेगी, हमेशा झूठी बात कहेगी। कहती है कि मैं जबर्दस्ती उसे भेजना चाहता हूं जेल में। जबर्दस्ती तो नहीं भेजना चाहता। ये मैं जरूर चाहता हूं मुकदमें, जो उसने जुर्म किए हैं इमरजेंसी के जमाने में, जो उसने पाप किये हैं, उनका मुकदमा अदालत में, कुछ में पेश है, कुछ और पेश होने वाले हैं। अदालत अगर इसके नतीजे के बाद पहुंचे सारी शहादत देखकर कि ये जेल भेजी जाएं, तो मैं उसका स्वागत करूंगा, मुझे खुशी होगी उसके जेल जाने में। (तालियां)

आज तक उसने यह नहीं माना कि इमरजेंसी लगाने में उसने कोई गलती की थी। आपातकालीन घोषणा में उसने कोई गलती की थी। एक लाख दो हजार पब्लिक वर्कर, जिनमें जयप्रकाश नारायण और ये नाना साहब वगैरा शामिल थे, मैं भी शामिल था, सब को जेल में भेज दिया था, बिना मुकद्दमा लगाये और चाहती थी ये कि मेरा बेटा राजगद्दी का मालिक हो। अब भी मुझे मालूम हुआ है कि कांग्रेसमैन उससे कोई मशविरा करने जाते हैं, तो कहती है कि संजय से पूछो, बेटे से पूछो, क्योंकि बेटा राजगद्दी का मालिक होने वाला है।

तो अगर आपने ये गलती की तो वो जो पुराने जुर्म, अपराध हुए थे, उनको इतनी जल्दी आप भूल गये, तो फिर ये देख लो कि डिक्टेटरशिप होगी। और फिर आजादी का काम

और वोट देने का काम और आपकी मर्जी का काम नहीं रहेगा। हिन्दुस्तान में एक डिक्टेटरशिप हो जायेगी, एक हिटलर पैदा हो जाएगा।

और, रहा इनका क्या नाम है, हमारे जनसंघ के दोस्तों का, तो जनसंघ के दोस्तों से हमारा सबसे बड़ा फर्क ये है कि ये हिन्दू राष्ट्रवाद चाहते हैं। हिन्दू राष्ट्र चाहते हैं, हिन्दुओं की तादाद ज्यादा है, तो फिर ये जो चाहेंगे, होगा तो देश में वही। लेकिन हम सब के साथ बराबर का बर्ताव करना चाहते हैं। हम, चाहे हिन्दू हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे ईसाई हों, या हिन्दू में चाहे ब्राह्मण हों, चाहे हरिजन हों, सब को एक समान, एक दृष्टि से देखना चाहते हैं। एक समान बर्ताव करना चाहते हैं।

बस, हमारा अपने राजनीतिक दोस्तों से यही फर्क है। इसके अलावा और साहब हैं एक जनता पार्टी के लीडर श्री चन्द्रशेखर, उनका कुछ कहना नहीं है। इनको मैंने ही बनवाया था पार्टी का प्रेजिडेंट। मैंने आज वक्त की कमी के कारण बतलाया नहीं और जो मोरारजी भाई हैं, तो उनको भी प्राइम मिनिस्टर हमने बनवाया था। केवल हमारे चिट्ठी लिखने पर प्राइम मिनिस्टर हो गये। उनका प्रताप कुछ नहीं, उमर में केवल मेरे से बड़े थे। मेरे पास सोशलिस्ट पार्टी के और जनसंघ के लीडर आये अटलबिहारी वाजपेयी, जबकि मैं अस्पताल में बीमार पड़ा था। इलेक्शन के बाद और मुझसे बोले कि हम चाहते हैं कि जगजीवनराम को प्राइम मिनिस्टर बनाना है। मैंने कहा क्यों बनाना चाहते हैं ? इसका इनाम देना चाहते हैं कि उन्होंने प्रस्ताव पेश किया था कि इमरजेंसी देश के अन्दर लागू की जाए। मैं हरगिज ऐसे आदमी को प्राइम मिनिस्टर बनाने के लिए तैयार नहीं हूं, मैंने कह दिया। मैं पसंद करूंगा इनके मुकाबले में मोरारजी भाई को, कम से कम सात बरस मुझसे उमर में बड़े हैं और उन्होंने 19 महीने जेलखाना काटा। मैं जानता हूं कि अहमदाबाद के मिल वालों का उनपे बहुत असर है और गरीब आदमी से उनका कोई सम्बन्ध नही है। गांव के गरीब और मजदूरों से उनकी कोई हमदर्दी नहीं है। लेकिन फिर भी जगजीवन राम के मुकाबले में मैं मोरारजी भाई को पंसद करूंगा, इएलिए मोरारजी प्राइम मिनिस्टर हुए।

और, जो मैंने बात कही कि खेती पर ज्यादा ध्यान दिया जाए और दस्तकारी बढ़ाने में ध्यान दिया जाए। फैसला हो गया जनता पार्टी में। लेकिन उस पर अमल नहीं हुआ। और इससे साबित है कि जब हमने चार्ज लिया था, तब एक करोड़ दो लाख आदमियों का नाम दर्ज था काम दिलाऊ दफ्तरों में, जो लड़के रोजगार चाहते थे और जब उन्होंने चार्ज छोड़ा है, तब एक करोड़ 35 लाख लड़कों का नाम दर्ज था। 33 लाख लड़के और उसमें दर्ज हो गये, क्यों ? क्यों कि बड़े कारखाने, बड़े कारखाने, छोटे रोजगारों की उन्होंने परवाह नहीं की। इसके अलावा उन्हें, अब ये देखें (जनसमूह का शोर) आप लोग जाकर फिर लौट आये हैं, केवल इस मीटिंग को डिस्टर्ब करने के लिए। मैंने आपसे पहले कहा है कि ये भले आदमियों का काम नहीं है। आपकी पार्टी ने यही सिखाया है। देश आपके कब्जे में आ जाएगा, आप इंदिरा से बदतर बदतर साबित होंगे, यही बतलाये देता हूं। आप दूसरों को बर्दाश्त भी नहीं करोगे। दूसरों की बातचीत दूसरों को भी नहीं सुनने दोगे, अपने आप न सुनो, न सुनने दोगे।

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि मोरारजी से हमारा झगड़ा हुआ इस बात पर कि उनका लड़का उनके पास रहकर रुपये कमा रहा था, करोड़ों–करोड़ों। ऐसा अखबारों में निकला, हमको नहीं मालूम है, कमा रहा था। नहीं कमा रहा था? उनके खिलाफ इल्जाम थे और मोरारजी ने 15 जनवरी सन् 78 को खुद यह कहा कि गुजरात में 15 जनवरी सन् 78

को कि मेरे लड़के पर आरोप लग रहे हैं और अखबारों में लिखा है। मैं कमीशन बैठाने को तैयार हूं। जब दिल्ली लौट के आये गुजरात से तो बेटा नाराज हुआ कि आपने क्या कह दिया? दो महीने तक कमीशन मुकर्रर नहीं किया। 11 मार्च 78 को मैंने उन्हें दो चिट्ठी लिखीं कि कमीशन मुकर्रर कीजिये, अपने लड़के के खिलाफ, आपका पॉलिटिकल सेक्रेटरी है, एक ही लड़का है, कम्युनिस्ट खानदान का मेम्बर है, अगर वो गलती करता है, तो वो गलती आपकी मानी जाएगी और राजनीतिक नेता केवल ईमानदार ही नहीं होने चाहिए, जनता को विश्वास होना चाहिए कि ईमानदार है, इसलिए कमीशन बिठाओ। बस, नाराज, आगबबूला हो गये कि मैंने ये हिम्मत की? मुझको क्या कहते हैं कि सब आरोप गलत हैं। मेरे साथ–साथ तुम्हारी घरवाली के खिलाफ भी शिकायतें आती थीं। मुझे बहुत दुख हुआ। तो, मैंने एकदम उनको चिट्ठी लिखी कि अच्छा, कांतिभाई के खिलाफ बाद में बिठाना कमीशन तुम, मेरी पत्नी के खिलाफ अभी कमीशन मुकर्रर कर दो, अभी इसी वक्त मैं चाहता हूं। दोस्तों, तो कहां थी हिम्मत, कहां थी हिम्मत ? नहीं बैठाया, लेकिन आग लग गयी उनके जिसम में।

दोस्तों, मुझे कहना नहीं चाहिए अपनी बाबत, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मेरी जीवनी जो है, एक खुली किताब है, चाहे प्राइवेट जीवन हो, चाहे पब्लिक जीवन हो। क्यों नहीं बिठाया कमीशन ? तो न अपने लड़के के खिलाफ बिठाया। कोई नहीं ? बैठाते कैसे ? हिम्मत नहीं थी। तो इस पर नाराज हुए। मेरे जनम दिवस पर राजनारायणजी मेरे दोस्त और भी यहां कुछ दोस्त बैठे हैं, नहीं माने, मेरा जनम दिवस मनाया। बहुत से सूबों के गांव के गरीब लोगों को मौका नहीं लगा आने का तो भी लाखों की तादाद में 20–25 लाख आदमी इकट्ठे हो गये थे 23 दिसम्बर, 1978 को। बस, ईर्ष्या का सांप लोट गया मोरारजी की छाती पर। नाराज हो गये। हमको निकाला, राजनारायण जी को निकाला। हमारे तीन चीफ मिनिस्टर, गरीब घरों में पैदा हुए थे– देवीलाल, रामनरेश यादव, कर्पूरी ठाकुर, जो नाई के घर पैदा हुआ था, वो हमारा चीफ मिनिस्टर था, यादव सब को निकाल दिया। जब राजनारायणजी को निकाल दिया और उन्होंने पार्टी छोड़ दी और अखबार वालों ने 26 जून को मोरारजी से पूछा कि अगर लोकदल के और भी आदमी छोड़ दें, तो कैसे गवर्नमेंट चलेगी? उन्होंने कहा, कोई परवाह नहीं है, अगर और छोड़ते हैं तो गवर्नमेंट मजबूत हो जाएगी। जरा सोचिये।

बस, मेरे साथियों के दिल में एक कांटा चुभ गया। मुझसे बोले कि चौधरी साहब, एक सीमा होती है, अब हमसे बर्दाश्त नहीं होता। मैंने तब भी हां नहीं करके दी। उधर तब मेरे लोगों ने राय दे दी, उनके खिलाफ और गवर्नमेंट गिर गयी। अब उनकी गवर्नमेंट बहुत मजबूत हो गयी है, फिर रहे हैं, घूम रहे हैं सारे देश में। गवर्नमेंट बड़ी मजबूत हो गयी है।

तो, इंदिरा का आदमी मैंने बनवा दिया था प्राइम मिनिस्टर। मैं बीमार पड़ा हुआ था, तब मैंने प्राइम मिनिस्टर बनाया और उधर मैं बीमार पड़ा हुआ था, हृदय–गति के रोग में और तब उन्होंने मुझसे इस्तीफा मांगा। ये उनकी शराफत की निशानी है दोस्तों!

अब मैं आप लोगों से एक बात कहना चाहता हूँ, उधर नहीं देखिये। जितने आप लोग खड़े हो या बैठे हों ये जनसंघ और आर0एस0एस0 के लोगों की शराफत देखो और इनकी ईमानदारी देखो, कि कैसे ये लोग पंचायत राज में विश्वास करते हैं। ये मुल्क को चलायेंगे। इंदिरा तो अकेली है, ये भी हो सकता है कि डिक्टेटरशिप की जो उसकी इच्छा है, वो खतम हो जाएगी, लेकिन ये संगठन है, जो डिक्टेटर है। ये संगठन जो डिक्टेटर है, डिक्टेटरशिप में

विश्वास करता है, वो ज्यादा खतरनाक होता है, बनिस्बत एक आदमी के। इनको कोई लज्जा इस बात की नहीं आती।

इन शब्दों के साथ जो मुझे बात कहनी थी, वो मैंने कह दी। आज मुझको आने में देर हो गयी, क्योंकि मुझे रतलाम पहुंचना है, एक और जगह पहुंचना है, शायद दो जगह पहुंचना है, इसलिए मैं माफी चाहता हूं और अब आपसे यह कहता हूं कि मेरे साथ आप तीन नारे लगा दीजिये और मुझको जाने की इजाजत दीजिए ––

भारत माता की जय।
भारत माता की जय।।
महात्मा गांधी की जय।
महात्मा गांधी की जय।।

————————————————